माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की संवेगात्मक परिपक्वता के सन्दर्भ में शिक्षण प्रतिबद्धता तथा व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन

आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ से
शिक्षाशास्त्र में पीएच.डी. उपाधि हेतु
शोध संक्षिप्तिका
सत्र–2021

शोध निर्देशिका :
डॉ0 सरिता गोस्वामी
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग

शोधकर्त्री :
नेहा श्रीवास्तव
पी.एच.डी. (छात्रा)
शिक्षाशास्त्र
एडमीशन आई.डी. 21211132

शोध केन्द्र

आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय
मेरठ

अनुक्रमणिका

क्र॰सं	विषय	पृष्ठ संख्या
1	प्रस्तावना	04-08
2	प्रस्तुत शोध की आवश्यकता एवं महत्व	08-09
3	संबन्धित साहित्य का सर्वेक्षण	09-10
4	समस्या कथन	11
5	प्रयुक्त चरों की व्याख्या	11-14
6	शोध उद्देश्य	14-15
7	शोध परिकल्पना	15-17
8	शोध परिसीमाऐ	17
9	शोध विधि	17
10	जनसंख्या एवं न्यादर्श	18
11	शोध उपकरण	18
12	शोध चर	18

13 प्रयुक्त सांख्यिकी विधि 18-19

14 संदर्भ ग्रन्थ सूची 20-21

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, तथा समाज में उसकी उपलब्धि महत्वपूर्ण होती है। वही समाज का निर्माता और संरक्षक होता है। यही कारण है कि मनुष्य के जीवन में शिक्षा एक पौष्टिक पदार्थ है, जिसके द्वारा उसे शक्ति और बल प्राप्त होता है तथा उसमें एक शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। मनुष्य एवं समाज दोनों शिक्षा के माध्यम से विकसित एवं पल्लवित होते हैं। शिक्षा के ही कारण नागरिक अपने उत्तरदायित्व को समझते हैं और अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। मनुष्य कि बौद्धिकता उसे प्रकृति कि सर्वोत्तम कृति के रूप में प्रस्तुत करती है। आश्चर्य है कि जन्मजात प्रवित्तियों को लेकर उत्पन्न होने वाले मनुष्य को शिक्षा के द्वारा ही अपना सर्वांगीण विकास करने का अवसर प्राप्त होता है।

जॉन डीवी ने कहा है-

"जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए भोजन का महत्व है उसी प्रकार सामाजिक विकास के लिए शिक्षा का।"

बालक के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा अति आवश्यक है।

दार्शनिक अरस्तू ने कहा है कि -

"मनुष्य कि क्षमताओं, विशेषतया उसकी मानसिक शक्तियों का विकास करना ताकि वह सर्वोच्च सत्य, सौन्दर्य एवं श्रेष्ठता कि अनुभूति का आनंद प्राप्त कर सके"।

शिक्षा व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए एक सशक्त प्रणेता है। शिक्षा हमारे ज्ञान की एक महत्वपूर्ण खोज है। शिक्षा वह प्रकाश है, जो अज्ञान के तिमिर का विनाश करता है वह ज्ञान चाहे बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, नैतिक तथा शारीरिक हो जीवन के समस्त पक्षों से शिक्षा जुड़ी हुई है।

शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की धुरी होता है। जिसके निर्देशन मे विद्यार्थी एवं समाज को एक सही दिशा प्रदान होती है तथा व्यक्तित्व एवं राष्ट्र-निर्माण मे सहायक होता है।

जैसा की ज्ञात है कि शिक्षक के व्यक्तित्व का छात्र पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है, अतः शिक्षक सच्चरित्र, उत्साही, कार्यकुशल, मित्र, परामर्शदाता, पथप्रदर्शक, अध्ययनशील, महत्वाकांक्षी, सहृदयी, व ज्ञानी होना चाहिए।

सभी शिक्षाविद इस बात को स्वीकार करते हैं कि छात्रों पर शिक्षक के आचरण का गहरा प्रभाव पड़ता है। अद्ध्यापक किसी भी देश कि शिक्षा की आत्मा होता है। वह समाज मे ज्ञान का आलोक भिखेरता है, और लाखों मे रोशनी बांटता है। व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के निर्माण मे शिक्षक द्वारा किए गए अनुपम योगदान एवं सेवा के ही कारण सभी लोग शिक्षक की प्रतिमा के समक्ष सदैव श्रद्धा से झुकते रहे हैं। इसीलिए कहा जाता है कि यदि शिक्षक अच्छा होगा तो राष्ट्र का भविष्य भी उज्जवल होगा।

अध्यापक संवेगिक रूप से परिपक्व, विभिन्न पारिस्थतियों में सामंजस्य स्थापित्य करने वाला, अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध व आकांक्षावान होना चाहिए।

संवेगात्मक परिपक्वता :- संवेगात्मक परिपक्वता का प्रभाव मानव के सम्पूर्ण जीवन पर उसके व्यवहार को एक सही दिशा एवं व्यवस्था देने के रूप मे पड़ता है । सांवेगिक रूप से परिपक्व व्यक्ति अपने आत्मविश्वास, सुरक्षा की भावना व

आत्मसम्मान द्वारा न केवल अपने संवेगो पर नियंत्रण करने मे सक्षम होता है, अपितु इस प्रकार की परिस्थितियां उत्पन्न होने पर किसी दूसरे व्यक्ति को निर्देशित करने के लिए पूर्ण रूप से योग्य होता है। संक्षिप रूप मे उस व्यक्ति को संवेगात्मक रूप से परिपक्व कहा जा सकता है, जो अपने संवेगों पर उचित अंकुश रखते हुए उन्हे भालि-भांति अभिव्यक्त कर सके। शिक्षक अपने विकास मे ऐसी परिस्थितियों का सामना करता है जो उसकी इच्छाओ और आवशयकताओ की पूर्ति एवं लक्ष्य प्राप्ति मे बाधक होती है, ऐसी स्थिति मे यदि शिक्षक अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है, तो वह अपनी परिस्थिति या वातावरण से समायोजन कर लेता है, पर यदि उसे सफलता नहीं मिलती है, तो उसमे असमायोजन उत्पन्न हो जाता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलता है। संवेगात्मक रूप से असंतुलित अनिर्दिष्ट उद्देश्य वाला, घृणा-द्वेष एवं बदले की भावना रखने वाला होता है। इस प्रकार से कुंठा, मानसिक संघर्ष, मानसिक तनाव आदि तत्व समायोजन की स्थिति मे विकार लाते है, जब शिक्षक अच्छी तरह से समायोजन की कोशिश करना चाहता है, तब ये तत्व उस समायोजन मे बाधा उत्पन्न करते है, समायोजन शिक्षक के व्यक्तितत्व मे उन्नति लाता है, किन्तु कुसमायोजन उसे अवनति की ओर ले जाता है। शिक्षक अपनी परिस्थितियों एवं वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करे, उसके लिए शिक्षक को उपयुक्त संवेगात्मक विकास के लिए प्रयास करना चाहिए।

शिक्षण प्रतिबद्धता :- शिक्षक की शैक्षिक प्रतिबद्धता उद्यम आधारित है। शिक्षक को अपने पेशे पर गर्व होना चाहिए जैसा कि **जी॰ सी॰ भट्टाचार्य** ने लिखा है कि “अपने उद्यम के साथ एकरूपता तथा आत्मीयता कि अनुभूति से ही व्यावसायिक नीतियो के अनुपालन कि योग्यता विकसित होती है”।

उद्यम के सभी कार्यक्रमों तथा क्रियाकलापों मे सहभागिता, प्रतिभागिता तथा आंतरिक प्रतिबद्धता से ही उन क्षेत्रों मे उत्कृठता कि प्राप्ति हो सकती है, साथ ही ज्ञान एवं उत्कर्ष कि चाहत उपयुक्त ढंग से संप्रेषित तथा व्यैक्तिक और उद्यगम संस्कृति के विकास को इसके लिए आवश्यक माना जाता है।

शिक्षक की शिक्षण प्रतिबद्धता से तात्पर्य, शिक्षकों के उन कार्यो के प्रति प्रतिबद्धता से है, जो कि शिक्षक अचार संहिता द्वारा इसके लिए निर्धारित किए गए हैं। शिक्षण प्रतिबद्धता शिक्षकों की ऐसी मानसिक अवस्था, रुझान अथवा कर्तव्य संकल्प है, जिसके फलस्वरूप शिक्षक अपने क्रियाकलापों के प्रति समर्पित एवं जागरूक रहते हुए अपने निजी स्वार्थों से उपर उठकर शिक्षा के लिए कार्य करते हैं।

व्यावसायिक आकांक्षा :- प्रत्येक व्यक्ति अपने प्रारम्भिक जीवन काल से ही कुछ न कुछ लक्ष्य निर्धारित करता है, जिन्हे वह प्राप्त करना चाहता है। यह आवश्यक नहीं है कि जो व्यक्ति शैक्षिक आकांक्षा निर्धारित करता है, वह उन्हे प्राप्त कर ही ले, असफल भी हो सकता है। लक्ष्यों का निरूपण कई प्रयोगों द्वारा निरुपित होगा। इन प्रयोगो में आकांक्षा स्तर एक पूर्ण परिभाषित लक्ष्य को निरूपित करते है, जो कि व्यक्ति कि पहुँच के अंतर्गत आता है।

शैक्षिक आकांक्षाओं के निर्धारण से व्यक्ति अपने आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि को ध्यान मे रखकर व्यक्ति अपने स्वयं के लिए निर्धारित जिन लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहता है वह लक्ष्य उसे उच्च शैक्षिक योग्यता, परिवार की आर्थिक स्थिति, परिवार से प्राप्त भौतिक सुविधाओ, समाज मे परिवार की सामाजिक एवं राजनैतिक पहुँच परिवार के मुखिया या अन्य सदस्यों का उच्च

पद पर होना आदि पर भी निर्भर करता है, जिसके आधार पर व्यक्ति शैक्षिक आकांक्षाओं का निर्धारण करता है।

प्रस्तुत शोध की आवश्यकता एवं महत्व

एक प्रभावशाली शिक्षक के लिए आवश्यक होता है कि वह अपने विद्यार्थियों एवं शिक्षण की पाठ्यवस्तु को समझें, छात्रों मे वांछित आदतों, अभिव्यक्तियों व कौशलों का निर्माण करने मे सहायक होता है, जिससे छात्र अपने जीवन एवं समाज में स्वस्थ समायोजन स्थापित कर सके।

विद्यार्थियों को समझने का अर्थ है कि अपने स्वयं के व्यक्तित्व, बुद्धि, अभिरुचियाँ, अभिवृतियाँ, प्रवणता, सृजनात्मकता तथा सामाजिक, मानसिक एवं सांवेगिक रूप से परिपक्व व सुदृढ़ होना चाहिए।

मध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं, जो न तो छोटे बालक होते हैं, औए न तो प्रौढ़। किशोर विद्यार्थियों मे शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। इस अवस्था मे उन्हे सही शिक्षा और मार्गदर्शन कि आवश्यकता होती है, क्योंकि उनकी संवेगात्मक परिपक्वता का उनके समायोजन पर प्रभाव पड़ता है। जैसा कि हमने हाल कि में सांवेगिक अपरिपक्वता का एक ज्वलंत उदाहरण 20 जुलाई 2022 की राजस्थान की एक घटना में एक शिक्षक ने अपने एक छात्र को सिर्फ इसलिए पीट दिया क्योंकि उस बच्चे ने उनके घड़े से पानी पी लिया था, शिक्षक की निम्न मानसिकता व सांवेगिक अपरिपक्वता

के कारण ही एक बच्चे की जान चली गयी। अतः एक शिक्षक का सांवेगिक रूप मे परिपक्व व अपने शिक्षण के प्रति प्रतिबद्ध होना नितांत आवश्यक है।

शिक्षकों की व्यावसायिक आकांक्षा से तात्पर्य, शिक्षा के क्षेत्र मे उच्च पद को प्राप्त करने की लालसा होती है, जिसके लिए हमें समय- समय पर अपने ज्ञान का परिमार्जन करना पड़ेगा। शिक्षकों की व्यावसायिक आकांक्षा का अर्थ है कि जीवन पर्यंत अधिगम की इक्छा रखना, शिक्षकों के सीखने के लिए सीखना एवं प्रतिष्ठित रहने के लिए सीखना तथा समकालीन विषयक मुद्दों के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षित होना आवश्यक है।

संबन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

रंजीत कुमार एवं रमेश कुमार (2022)- जर्नल में प्रकाशित शोधपत्र में 200 शिक्षकों पर भावात्मक पैमाने का उपयोग करते हुए ज्ञात किया कि अध्यापकों की भावात्मक परिपक्वता मे कोई लैंगिक अंतर नहीं है तथा शिक्षकों की योग्यता और स्थानीयता के संबंध में भावात्मक परिपक्वता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

सीरिल, ए. वेंस, राज, तथा एम एन्टोनी (2018)- जर्नल शैक्षिक मनोविज्ञान मे इनका एक शोध पत्र प्रकाशित हुआ था जिसमे इनहोने 800 हाई-स्कूल के शिक्षकों पर संवेगात्मक परिपक्वता तथा मेटाकाग्निशन का मूल्यांकन करके ज्ञात किया कि हाईस्कूल के अध्यापकों की संवेगात्मक परिपक्वता एवं मेटाकाग्निशन के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

रफ़ीक अहमद एवं किरण (2017)- प्रकाशित जर्नल में अपने शोध-पत्र में इन्होने 200 सरकारी माध्यमिक विध्यालयों के शिक्षकों पर सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए निष्कर्ष निकाला कि संवेगात्मक परिपक्वता का उनकी डिग्री, योग्यता, व स्थानीयता का कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मनीषा तिवारी (2015)- इन्होने 600 शिक्षक व 300 शिक्षिकाओं पर निरीक्षण विधि का प्रयोग करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि मध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक व्यावसायिक संतुष्टि को शैक्षिक व्यावसायिक, आर्थिक, सामाजिक तत्वों ने प्रभावित किया तथा विज्ञान व कला वर्ग के शिक्षक व शिक्षिकाओं में व्यावसायिक संतुष्टि मे सार्थक अंतर पाया गया।

शालिनी त्यागी (2015)- इन्होने 150 शिक्षकों पर घटनोत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि प्राथमिक स्तर की महिला शिक्षिकाएँ, पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा व्यावसायिक रूप से अधिक प्रतिबद्ध हैं।

आर॰ तिवारी (2018) - 11वीं कक्षा के 240 छात्रों पर व्यावसायिक आकांक्षा के विभिन्न शालाओं का अध्ययन करते हुए, वैज्ञानिक सांख्यिकीय विधि का प्रयोग कर यह निष्कर्ष निकाला कि छात्रों कि व्यावसायिक आकांक्षा पर लिंग व शालाओं के प्रकार की अन्तः क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

लक्ष्मी वर्मा, पद्मा अग्रवाल एवं लता सक्सेना (2016) - प्रस्तुत शोधपत्र मे शोधार्थी ने 957 छात्रों पर व्यावसायिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग करते हुए सांख्यिकीय विश्लेषण करते हुए ज्ञात किया कि वे किशोर जिनका व्यावसायिक आकांक्षा स्तर अधिक होगा, उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न व्यावसायिक आकांक्षा स्तर वाले छात्रों की तुलना मे अधिक होगा।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध "**माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की संवेगात्मक परिपक्वता के संदर्भ में उनकी शिक्षण प्रतिबद्धता तथा व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन"** से संबन्धित होगा जिस पर शोध प्रबंध का सृजन किया जायेगा।

प्रयुक्त चरों की व्याख्या

संवेगात्मक परिपक्वता - उस व्यक्ति को संवेगात्मक रूप से परिपक्व कहा जा सकता है, जो अपने संवेगों पर उचित नियंत्रण रखते हुए उन्हें भली-भांति अभिव्यक्त कर सके। ऐसे व्यक्ति में कुछ विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं -

- उसके व्यवहार मे प्रायः सभी प्रकार के संवेग दिखाई देते हैं।
- संवेगों की अभिव्यक्ति मे पर्याप्त सुधार हो जाता है।
- वह अपने संवेगों मे अंकुश रख सकता है।

- वह वास्तविक जीवन की कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम हो जाता है।
- वह मानसिक और बौद्धिक शक्तियों का ठीक प्रकार से प्रयोग करने लगता है।
- उसमे पर्याप्त आत्मसमान तथा स्वाभिमान का जन्म हो जाता है।

शिक्षण प्रतिबद्धता - शिक्षण प्रतिबद्धता से तात्पर्य है कि शिक्षक अपना कार्य कितने प्रभावशाली ढंग तथा सफलतापूर्वक कर रहा है तथा उसके शिक्षण कार्य से विद्यार्थी किस सीमा तक संतुष्ट है। शिक्षण प्रतिबद्धता से अभिप्राय, शिक्षण कार्य के लिए योजना निर्माण तथा उसकी तैयारी, कक्षा प्रबंध, सम्प्रेषण-क्षमता, छात्रों को प्रेरित करने से है। शिक्षक को अपने व्यावसायिक उत्तरदायित्वों के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए। एक शिक्षक मे करुणा, दया, त्याग, ममता, विद्वता, सहनशीलता, नम्रता, स्नेह, सद्भावना, सुशीलता, तथा ज्ञान कि गरिमा समाहित होनी चाहिए।

व्यावसायिक आकांक्षा - व्यावसायिक आकांक्षा दो शब्दों से मिलकर बना है- व्यवसाय और आकांक्षा। **अमेरीकन कॉलेज शब्द कोश** के अनुसार :- "An

occupational is group of similar position in plant, business trade or calling."

Occupational aspiration may be defined as one's is pattern of interest, aptitude, like and dislike preferred in any manners wisely or unwisely, by self or by any other sources for a given vocational area or vocation when individual express or preferences, he ranks two or more vocation among some continuum or desirability or thinking.

व्यावसायिक आकांक्षा से स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति अपने लिए कौन से व्यवसाय को श्रेष्ठ मानता है, जिसे वह बाधारहित अवस्था मे चुनने की इच्छा रखता है। व्यक्ति की आकांक्षा का संबंध उसकी आत्मा, रुचि व योग्यता से होता है। व्यावसायिक आकांक्षा, व्यावसायिक विकास का एक पक्ष है। यह एक प्रक्रिया है न कि एक घटना, जो अभिरुचि, परिपक्वता तथा अनुभव पर आधारित होती है।

जे॰ डी॰ फ्रैंक (1935) - किसी परिचित कार्य मे व्यक्ति अपने अतीत कि उपलब्धि को जानते हुए भी भविष्य मे जिस सीमा तक उपलब्धि कि आकांक्षा करता है उसे व्यक्ति कि आकांक्षा कहा जाता है।

जेम्स ड्रेवर (1956) - आकांक्षा का अर्थ है कि एक व्यक्ति कि अपने स्वानुभवों के द्वारा सफलता एवं असफलता की प्राप्ति।

शोध के उद्देश्य

1) माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
2) माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का अध्ययन करना ।
3) माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन करना।
4) माध्यमिक स्तर के उच्च संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त महिला अध्यापकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का अध्ययन करना ।
5) माध्यमिक स्तर के निम्न संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त महिला अध्यापकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का अध्ययन करना ।
6) माध्यमिक स्तर के उच्च संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त महिला अध्यापकों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन करना ।

7) माध्यमिक स्तर के निम्न संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त महिला अध्यापकों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन करना ।

8) माध्यमिक स्तर के उच्च संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त पुरुष अध्यापकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का अध्ययन करना ।

9) माध्यमिक स्तर के निम्न संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त पुरुष अध्यापकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का अध्ययन करना ।

10)माध्यमिक स्तर के उच्च संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन करना ।

11) माध्यमिक स्तर के निम्न संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन करना ।

12) माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की संवेगात्मक परिपक्वता के संदर्भ मे उनकी शिक्षण प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1) माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की उनकी संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

2) माध्यमिक स्तर के महिला अध्यापकों की उनकी संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

3) माध्यमिक स्तर के पुरुष अध्यापकों की उनकी संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

4) माध्यमिक स्तर के उच्च संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त महिला अध्यापकों की उनकी शिक्षण प्रतिबद्धता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
5) माध्यमिक स्तर के निम्न संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त महिला अध्यापकों की उनकी शिक्षण प्रतिबद्धता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
6) माध्यमिक स्तर के उच्च संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त पुरुष अध्यापकों की उनकी शिक्षण प्रतिबद्धता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
7) माध्यमिक स्तर के निम्न संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त पुरुष अध्यापकों की उनकी शिक्षण प्रतिबद्धता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
8) माध्यमिक स्तर के उच्च संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त महिला अध्यापकों की उनकी व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
9) माध्यमिक स्तर के निम्न संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त महिला अध्यापकों की उनकी व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
10) माध्यमिक स्तर के उच्च संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त पुरुष अध्यापकों की उनकी व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
11) माध्यमिक स्तर के निम्न संवेगात्मक परिपक्वता से युक्त पुरुष अध्यापकों की उनकी व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

12) माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की संवेगात्मक परिपक्वता के संदर्भ मे उनकी शिक्षण प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन परिसीमाये

- यह अध्ययन मेरठ जिले में स्थित शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों के शिक्षकों पर किया जायेगा।
- यह अध्ययन माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों पर किया जायेगा।
- यह अध्ययन माध्यमिक स्तर पर कार्यरत कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के शिक्षकों पर किया जायेगा।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में मेरठ मण्डल के शिक्षकों को लिया जायेगा तथा उनका चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा निरपेक्ष भाव से किया जायेगा। शोध हेतु कुल न्यादर्श 400 होंगे, जिसमें 200 महिला वर्ग व 200 पुरुष वर्ग के शिक्षक सम्मिलित होंगे।

शोध उपकरण

प्रदत्तों के संकलन हेतु इस शोध कार्य में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा :-

- एस॰ डहिया और एस॰ गहलावत: भावनात्मक क्षमता पैमाना ।
- रविंदर कौर, सर्बजीत कौर, एवं सर्वजीत कौर ब्रार : शिक्षक व्यावसायिक प्रतिबद्धता पैमाना ।
- नसरीन और ए॰ अनीस : शिक्षक व्यावसायिक आकांक्षा प्रश्नावली ।

शोध चर

1 स्वतंत्र चर- संवेगात्मक परिपक्वता ।

2 आश्रित चर - शिक्षण प्रतिबद्धता, व्यावसायिक आकांक्षा ।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधि

प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु विवरणात्मक सांख्यिकी के अतिरिक्त निष्कर्षात्मक सांख्यिकी का भी प्रयोग किया जायेगा । अंतरों की सार्थकता को ज्ञात करने हेतु t-test अथवा उपयुक्त सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जायेगा,

तथा सहसंबंध ज्ञात करने के लिए कार्ल पियर्सन गुणन आघूर्ण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

$$r = \frac{N\sum xy - \sum x, \sum y}{\sqrt{[N\sum x^2 - (\sum x^2)][N\sum y^2 - (\sum y^2)]}}$$

जहां x तथा y मूल प्राप्तांक हैं तथा x^2 तथा y^2 प्राप्तांकों का वर्ग है।

- $\sum x$ = x प्राप्तांकों का योग ।
- $\sum y$ = y प्राप्तांकों का योग ।
- $\sum x^2$ = x प्राप्तांकों के वर्गों का योग ।
- $\sum y^2$ = y प्राप्तांकों के वर्गों का योग ।
- $\sum xy$ = x तथा y प्राप्तांकों के गुणनफल का योग ।
- N = व्यक्तियों की संख्या ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, जे॰ सी॰ (1995), टीचर्स एंड एजूकेशन इन डेवलपिंग सोसाइटी, दिल्ली विकास पब्लिकेशन होम प्राइवेट लिमिटेड।
- गुप्ता, एस॰ पी॰ (2018), अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- भट्टाचार्य जी॰ सी॰ (2003), अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, हॉस्पिटल रोड, आगरा।
- भट्टाचार्य जी॰ सी॰ (2002), “दक्षता आधारित तथा प्रतिबद्धता उन्मुख शिक्षक-शिक्षा प्रणाली की व्यावहारिक उपादेयता” भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष-20, अंक-4, अप्रैल 2002 ।
- यादव, प्रतिभा (2012), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, साहित्य प्रकाशन, आगरा ।
- http://shodh.inflibitnet.ac.in
- www.imanagerpublication.com
- Journal on educational psychology,v12,n2,p36-43 aug-oct2018
- An introduction journal of education and applied social science: vol8,no2pp, 547-552, august 2017.
- Journal of advances and scholarly researches in applied education vol-19/issue 4.
- www.researchgate.net/professional-commitment
- www.sarkariguider.in/professional-aspiration
- www.aajtak.in/article,rajasthan,20,july,2022

- www.targetnotes.com/professional-aspiration
- www.ijesrr.org/volume-2,issue-4,august-2015
- www.google.search/professional-commitent
- www.wikipedia.com/adjustment
- www.semanticscholar.org/paper/emotional-maturity
- www.ijmra.us/vol.8/issue12/dec2018
- Singh, Y. and bhargava, M. (2006). Manual of emotional maturity scale. National Psychological corporation, Agra.
- www.irjmsh.com/vol6/issue9/2015
- www.es-journals.org/vol3/pp.1-9/may2014
- Journal of advances and scholarly researches in applied education/multidisciplinary academic research-ignited.in/p/221329.
- https://www.edupediapublications.org/journals/vol 5/issue 05/march 2018.
- https://ncert.nic.in/bhartiya_adhunik_shiksha/vol4/apr2015.
- http://hdl.handle.net/10603/176495.
- Jiwaji University,Gwalior/D38165571
- Journal of ravishankar university, part-A,22,121-124,2016
- Global journal of engineering science and researches/DOI-10.5281/zenodo.1434191